

बुनियादी साक्षरता में बहुभाषिकता का महत्व एवं विकास चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

नेहा गोस्वामी*

वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति बेहतर अवसरों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन कर रहा है जिससे बहुसांस्कृतिकता एवं बहुभाषिकता का तेजी से विकास हुआ है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षण-अधिगम के लिए मातृभाषा के प्रयोग पर सर्वाधिक बल देने के कारण बहुभाषिकता के महत्व को सामान्यतः अनदेखा कर दिया जाता है। सामान्यतः किसी भी बच्चे के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है। अतः किसी भी बच्चे के प्रारंभिक वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। विभिन्न शोधों के अनुसार 2 से 8 वर्ष तक की आयु के बच्चे भाषा बहुत जल्दी सीख लेते हैं एवं बहुभाषिकता से इस उम्र के विद्यार्थियों को संज्ञानात्मक लाभ होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी बुनियादी साक्षरता को प्राथमिकता देने पर बल देती है। अंततः इसी समय बच्चे का भाषिक विकास बहुत तीव्र गति से होता है। भाषा संबंधी अधिकांशतः शोध स्पष्ट रूप से बताते हैं कि जो बच्चे दो या दो से अधिक भाषाओं को अपने आस-पास बोलते हुए सुनते हैं उनका संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास अपेक्षाकृत बेहतर ढंग से होता है। ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि बुनियादी स्तर पर बहुभाषिकता को किस प्रकार से संसाधन के रूप में प्रयोग किया जाए, ताकि बच्चे के विकास में सहायता प्राप्त हो सके। इसके साथ यह भी विचारणीय है कि जब शिक्षक कक्षा में बहुभाषिकता का प्रयोग करने का प्रयास करते हैं, तो उनको किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और इन चुनौतियों से वे किस प्रकार जूझते हैं। इस प्रकार के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए यह शोध-पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 (एन.सी.एफ.एस.एस.) एवं विद्यालयी शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ.एस.ई.) के आलोक में बहुभाषिकता का बुनियादी साक्षरता में महत्व, उसकी चुनौतियों एवं संभावनाओं पर विचार-विमर्श करता है। यह नीति एवं पाठ्यचर्या बुनियादी स्तर से ही बच्चों से विभिन्न भाषाओं के संपर्क को प्रमुख मानती है और बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के साथ-साथ शिक्षकों से भी द्विभाषी शिक्षण की अपेक्षा करती है, ताकि बच्चे भाषा उचित तरीके से सीख सकें।

बुनियादी साक्षरता का तात्पर्य व्यक्ति की ऐसी शिक्षा का पहला कदम है, जो न केवल उसकी क्षमताओं से है, जो उसे पढ़ने, लिखने और समझने शैक्षिक उन्नति में बल्कि उसके जीवन की गुणवत्ता में सक्षम बनाती है। यह किसी भी बच्चे के लिए भी सुधार लाती है। बुनियादी साक्षरता केवल

पाठ पढ़ने या लिखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विचारों, भावनाओं और सूचनाओं को प्रभावी ढंग से समझने और संप्रेषित करने की क्षमता भी है।

बुनियादी शिक्षा के विकास में बहुभाषिकता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। बहुभाषिकता से तात्पर्य है— एक व्यक्ति द्वारा दो या दो से अधिक भाषाओं का ज्ञान और उनके प्रयोग की क्षमता। इसका अर्थ सिर्फ भाषाओं का ज्ञान नहीं, बल्कि उन भाषाओं को सही संदर्भ में समझने और प्रयोग करने की क्षमता भी है। बहुभाषिकता न केवल सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है, बल्कि संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक संपर्क और वैश्विक समझ के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अधिकांश बच्चे विद्यालय आने से पूर्व केवल एक भाषा नहीं बल्कि सामान्यतः अनेक भाषाएँ सीख लेते हैं। विद्यालय आने से पूर्व बच्चा लगभग पाँच हजार अथवा उससे भी अधिक शब्दों को जानता है। अतः बहुभाषिकता हमारी पहचान अथवा अस्मिता की निर्धारक है (सिंह और कपूर, 2010)। बहुभाषिकता से बच्चों में तर्कशक्ति, समस्या समाधान एवं रचनात्मकता का विकास होता है, जो उन्हें जीवन व्यतीत करने हेतु बेहतर तरीके से तैयार करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षा के बुनियादी वर्षों में ही बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया है। इस नीति के अनुसार ‘फाउंडेशनल स्टेज की शुरुआत और इसके बाद से ही बच्चों को विभिन्न भाषाओं में (लेकिन मातृभाषा पर विशेष बल देने के साथ) एक्सपोजर दिए जाएँगे। सभी भाषाओं को एक मनोरंजक और संवादात्मक शैली में पढ़ाया जाएगा, जिसमें बहुत सारी संवादात्मक बातचीत होगी।’ (राष्ट्रीय शिक्षा

नीति 2020, अनुच्छेद 4.12)। बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में भी शुरुआती कक्षाओं में बहुभाषी दृष्टिकोण अपनाने की बात की गई है। ‘उम्र के शुरुआती 6 से 8 वर्षों में बच्चों का संपर्क यदि नई भाषाओं से कराया जाए तो वे इन भाषाओं को विशेषकर अर्थपूर्ण संदर्भों में मौखिक संप्रेषण को तेजी से सीखने में सक्षम होते हैं।’ (बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, खंड 3.2, पृष्ठ संख्या 77)

हालाँकि, बहुभाषिकता के विकास में अनेक चुनौतियाँ भी हैं। इनमें सबसे बड़ी चुनौती विभिन्न भाषाओं के लिए शिक्षण सामग्री तथा योग्य शिक्षकों की उपलब्धता है। इसके अतिरिक्त कक्षा में बहुभाषिकता को धरातलीय स्तर पर लागू करने में कठिनाइयाँ आती हैं। इन चुनौतियों के अलावा बहुभाषिकता के विकास में अनेक संभावनाएँ भी हैं। ‘भारत में बहुभाषिकता व्यापक स्तर पर दृष्टिगत होती है और अधिकांश बच्चे अपने जीवन के आरंभिक वर्षों से ही एक से अधिक भाषाओं के संपर्क में होते हैं। बहुभाषी अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय परिवेश में किसी का भी प्रारंभिक वर्षों से ही बहुभाषिक होना जीवन में विभिन्न समुदायों के बीच हमारे संप्रेषण को आसान बना देता है’ (बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, खंड 3.1)। यदि सही रणनीति अपनाई जाए एवं नीतियों को सही ढंग से लागू किया जाए, तो बहुभाषिकता विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक हो सकती है। इसके साथ ही, समाज में भाषा की विविधता को बनाए रखने और समृद्ध करने में भी बहुभाषिकता अहम भूमिका निभा सकती है। अतः बुनियादी स्तर पर बहुभाषिकता के

महत्व को समझते हुए, कक्षा में इसके विकास के लिए विभिन्न संभावनाओं एवं नीतियों पर गहराई से विचार करना अति आवश्यक है। बहुभाषिकता की संभावनाओं पर विचार करना न केवल शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज में भाषा की भूमिका को समझने व उसे सशक्त बनाने में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

शोध उद्देश्य

इस शोध अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य बहुभाषिकता के महत्व को उजागर करना है। यह न केवल बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में सहायक है, बल्कि उन्हें विभिन्न भाषाओं एवं संस्कृतियों के प्रति संवेदनशील बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस शोध-पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 एवं विद्यालयी शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के संदर्भ में बहुभाषिकता की भूमिका का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इसके साथ यह भी समझने का प्रयास किया गया है कि इन दस्तावेजों के प्रावधान बुनियादी साक्षरता के स्तर पर बहुभाषिकता के विकास में किस स्तर तक सहायक हो सकते हैं। इसके साथ ही, उन चुनौतियों की पहचान की जाएगी जो इस क्षेत्र में उभर सकती है, जैसे— भाषाई संसाधनों की कमी तथा शिक्षकों का प्रशिक्षण। इसमें संभावित समाधान और अवसरों की भी चर्चा की जाएगी, जिससे बहुभाषिकता के विकास को प्रोत्साहित किया जा सके। इस प्रकार इस शोध-पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- बहुभाषिकता के महत्व को उजागर करना।

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 एवं विद्यालयी शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के संदर्भ में बहुभाषिकता की भूमिका का विश्लेषण करना।
- बहुभाषिकता से संबंधित चुनौतियों की पहचान करके उनका विश्लेषण करना।
- संभावनाओं एवं संभावित समाधानों के सुझाव देना।

साहित्य समीक्षा

किसी भी विषय के अध्ययन के लिए उसके आधारभूत सिद्धांतों एवं व्यावहारिक संदर्भों को समझना अत्यंत आवश्यक है। बहुभाषिकता के संदर्भ में भाषाविदों के मन में यह प्रश्न उठता है कि क्या दो भाषाएँ सीखने का अनुभव भारतीय शिक्षा प्रणाली में संज्ञानात्मक या भाषायी भ्रम की स्थिति उत्पन्न करेगा। एक लंबे समय तक यही माना गया कि द्विभाषिकता से संज्ञानात्मकता वृद्धि और शैक्षिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मैकनामारा (1966) ने 1918 से 1962 के बीच प्रकाशित हुए कुछ शोधों का अध्ययन किया, जो बच्चों की द्विभाषिकता पर आधारित थे। इन सभी शोधों का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष ज्ञात हुआ कि द्विभाषी लोगों की भाषा की समझ, एकभाषी लोगों की तुलना में कमजोर होती है। इसके पीछे उन्होंने कई कारण बताए थे, जैसे— दो भाषाएँ जो भिन्न होती हैं उससे बच्चों में भ्रम की स्थिति पैदा होना, नई भाषा सीखने के लिए सांस्कृतिक आत्मसातीकरण का न होना, किसी

भाषा को सीखने के लिए पर्याप्त अवसर एवं समय का न होना आदि। सायर (1923) ने 7 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों पर किए गए अपने अध्ययन 'दी इफेक्ट ऑफ बाइलिंग्वालिज्म ऑन इंटेलिजेंस' में दर्शाया कि ऐसे बच्चे जो दो भाषाएँ (वेल्स एवं अंग्रेजी) बोलते हैं उनका आई.क्यू. (बुद्धिमत्ता) स्तर एक भाषा बोलने वाले अपने सहपाठी की तुलना में कम होता है। दूसरी तरफ विभिन्न शोध अध्ययन यह दर्शाते हैं कि बहुभाषिकता का संज्ञानात्मक विकास से गहरा सकारात्मक संबंध है। इसके साथ ही अनेक भाषा वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध अध्ययन इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं कि बहुभाषी बच्चों में शब्द एवं अर्थ के संबंध की एक बेहतर समझ विकसित होती है।

एंको-वोरल (1972) ने अपने शोध अध्ययन में द्विभाषी (अफ्रीकी एवं अंग्रेजी) और एकभाषी (अंग्रेजी) विद्यार्थियों को लेकर परीक्षण किया। दोनों समूहों को अंग्रेजी के तीन शब्द cap, can, hat देकर पूछा गया कि can और hat में से कौन-सा शब्द cap के समानार्थक है। कुछ बच्चों ने इसका उत्तर can दिया जोकि ध्वनि व्यवस्था को ध्यान में रखकर लिया हुआ निर्णय है, जबकि कुछ बच्चों ने इसका उत्तर hat दिया जो कि अर्थ को ध्यान में रखकर लिया हुआ निर्णय है। अपने शोध अध्ययन के माध्यम से इन्होंने यह ज्ञात किया कि 7 वर्ष के बाद द्विभाषी विद्यार्थी, एकभाषी विद्यार्थियों की तुलना में अर्थ की बेहतर समझ प्राप्त कर लेते हैं। कमिन्स एवं स्वाइन (1986) ने अपने शोध अध्ययन 'बाइलिंग्वालिज्म इन एजुकेशन' में यह वर्णित किया कि द्विभाषिकता, संज्ञानात्मकता एवं बुद्धिमत्ता में सकारात्मक संबंध है। इनके शोध

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दो भाषा बोलने वाले बच्चे न केवल अन्य भाषाओं पर अच्छा नियंत्रण रखते हैं, बल्कि अकादमिक स्तर पर भी उनमें रचनात्मकता का स्तर अच्छा होता है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में किसी एक भाषा के माध्यम से संप्रेषण नहीं हो सकता। बच्चों के लिए भी बहुभाषिकता के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि 'भारत का समाज बहुभाषी है, तो यहाँ व्यक्तित्व का निर्माण भी बहुभाषी ही होगा। बहुत से बच्चों की घर की भाषा (होम लैंग्वेज) विद्यालय की भाषा से इतर होती है। बहुभाषिकता घर और विद्यालय की भाषा में आई दूरी को पाटता है।' बहुभाषिकता की इसी उपयोगिता को देखते हुए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* (अनुच्छेद 4.13) में त्रिभाषा फ़ॉर्मूले को जारी रखने को कहा गया है। "संवैधानिक प्रावधानों, लोगों, क्षेत्रों, संघ की आकांक्षाओं, बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने की ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए त्रिभाषा फ़ॉर्मूले को लागू किया जाना जारी रहेगा। हालाँकि त्रिभाषा के इस फ़ॉर्मूले में काफी लचीलापन रखा जाएगा तथा किसी भी राज्य पर कोई भाषा थोपी नहीं जाएगी।" *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के अनुसार बुनियादी स्तर पर बच्चों की मातृभाषा एवं अन्य भाषाओं का प्रयोग बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है, इसलिए कक्षा में इन्हें अनिवार्य रूप से स्थान दिया जाए। "खासतौर पर, सभी भाषाओं को कक्षा में स्थान दिया जाए और उनकी सराहना की जाए, बुनियादी स्तर पर बच्चों को अपने घर की भाषा में अभिव्यक्त करने, अंतःक्रिया करने और उसके जरिए सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए"

एन.सी.एफ.एफ.एस. (खंड 1.5.2)। *विद्यालयी शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में भी बुनियादी स्तर पर ही दो भाषाओं को पढ़ाने की बात कही गई है।

विधि

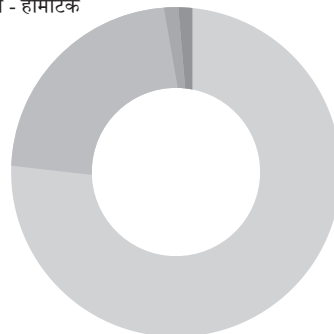
बहुभाषिकता एक गुणात्मक शोध अध्ययन था, जिसमें विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया। *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022*, जिसके अंतर्गत विशेष रूप से *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* एवं *विद्यालयी शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* (एन.सी.एफ.एस.ई.) में वर्णित बहुभाषिकता से जुड़े प्रावधानों, लक्ष्यों और अपेक्षित परिणामों का गहन विश्लेषण किया गया। इसका उद्देश्य बुनियादी साक्षरता में बहुभाषिकता के प्रभाव, चुनौतियों एवं संभावनाओं का व्यवस्थित विश्लेषण करना है। इसके साथ ही, इन नीतियों की तुलना पिछली शैक्षिक नीतियों से की गई, ताकि बहुभाषिकता के विकास में हुए परिवर्तनों, प्रगति एवं बहुभाषिकता के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों को समझा जा सके एवं उनके समाधान के लिए सार्थक प्रयास किए जा सकें।

भारत में बहुभाषिकता

भारत अपनी विविधता के लिए संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। बहुभाषिकता विविधता का एक अभिन्न अंग है। भारतीय समाज में बहुभाषिकता का परिदृश्य अत्यंत व्यापक एवं विविधतापूर्ण है, जिसके अंतर्गत हजारों भाषाएँ एवं बोलियाँ एक साथ विद्यमान हैं। भारत की जनगणना 2011 के

अनुसार 19569 मातृभाषाओं के आँकड़े प्राप्त हुए थे। इनका तार्किक रूप से वर्णन करने पर मातृभाषाओं की संख्या 1369 निर्धारित की गई है। भारत के रजिस्ट्रार जनरल के अनुसार, इन आँकड़ों को भाषा के संदर्भ में बड़े समूहों में एकीकृत करने पर, कुल 121 भाषाएँ निर्धारित की गई हैं। *भारतीय संविधान* की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को अनुसूचित किया गया है। इनमें से 12 भाषाएँ मोटे तौर पर लगभग 97 प्रतिशत जन-समुदाय द्वारा प्रयोग की जाती हैं। अन्नामलाई (1979) ने भारत में संरचनात्मक विभेद के आधार पर भाषाओं की संख्या 200 बताई है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि बहुभाषिकता भारतीय समाज की एक विशेषता है। ये भाषाओं के सांस्कृतिक आदान-प्रदान का ही परिणाम है कि भाषा शिक्षण के लिए किसी ठोस योजना के न होने पर भी भारत में बहुभाषिकता का स्वरूप प्रगतिशील रहा है। श्रीवास्तव (2018) के अनुसार बहुभाषिकता की दृष्टि से भारत संभवतः विश्व में सर्वाधिक विविधताओं वाला देश है।

- इंडो - यूरोपियन(इंडो-आर्यन)
- इंडो - यूरोपियन(ईरानियन)
- इंडो - यूरोपियन(जर्मनिक)
- द्रविडियन
- ऑस्ट्रो - एशियाटिक
- तिब्बतो - बर्मा
- सिमेटो - हेमिटिक



स्रोत — भाषा-परिवार एवं भाषाओं की संख्या — जनगणना रिपोर्ट 2011

हजारों मातृभाषाएँ यहाँ हजारों वर्षों से बोली जाती रही हैं, विभिन्न भाषा भाषियों के बीच परस्पर संवाद के लिए अलग-अलग स्तरों पर कोई न कोई भाषा संपर्क भाषा की ज़िम्मेदारी निभाती दिखाई देती है।

भारत की ये सभी भाषाएँ विभिन्न भाषा परिवारों का हिस्सा हैं। भारतीय भाषाओं को सात भाषा परिवारों में विभाजित किया है। इनमें सर्वाधिक भाषाएँ भारोपीय (इंडो-यूरोपियन) भाषा परिवार का हिस्सा हैं, जिसके अंतर्गत 21 भाषाएँ हैं। द्रविड़ भाषा परिवार जो कि द्वितीय स्थान पर है, इसके अंतर्गत 17 भाषाएँ शामिल हैं। इसके साथ ही तिब्बत-बर्मी भाषा परिवार की आबादी 1 प्रतिशत है लेकिन इसके अंतर्गत 66 भाषाएँ आती हैं। ये सभी भाषाएँ भारत की भाषाई संपदा का प्रतीक हैं।

भारत की इस बहुभाषी संरचना को ध्यान में रखते हुए, यहाँ की शिक्षा नीतियों में बहुभाषिकता को एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में देखा गया है। सर्वप्रथम कोठारी आयोग (1964-66) ने बहुभाषिकता के महत्व को रेखांकित करते हुए विद्यालयों में त्रिभाषा सूत्र को लागू करने की सिफारिश की थी। जिसका उद्देश्य यह था कि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के साथ-साथ राजभाषा या संपर्क भाषा एवं एक विदेशी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकें। तत्पश्चात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने भी त्रिभाषा सूत्र को समर्थन दिया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी द्विभाषिकता या बहुभाषिकता के संज्ञानात्मक लाभों को स्वीकार करते हुए, बहुभाषी शिक्षण की सिफारिश की गई है। “भाषा शिक्षण बहुभाषिक होना चाहिए, केवल कई भाषाओं के शिक्षण के ही

अर्थ में नहीं, बल्कि रणनीति तैयार करने के लिहाज से भी, ताकि बहुभाषिक कक्षा को एक संसाधन के तौर पर प्रयोग में लाया जाए।” (खंड 3.1.1)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं बहुभाषिकता

बहुभाषिकता को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार सिद्धांतों में सम्मिलित किया गया है। इस नीति में भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधारों के लिए प्रस्तावित घटकों में बहुभाषिकता को विशेष महत्व दिया गया है। यह नीति न केवल भारतीय भाषाओं के संवर्धन पर बल देती है, बल्कि शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में घर की भाषा या मातृभाषा या स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण को प्राथमिकता देने की बात भी करती है। भाषाई संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निम्नलिखित प्रावधान किए गए हैं—

- **मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार “कम से कम कक्षा 5 यदि संभव हो तो कक्षा 8 या उससे भी आगे तक शिक्षा का माध्यम घर की भाषा या मातृभाषा या स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा होना चाहिए।” इस नीति के अनुसार ‘यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास जल्दी किए जाएँगे कि बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शिक्षण के माध्यम के बीच यदि कोई अंतराल विद्यमान हो तो उसे समाप्त किया जा सके’ (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुच्छेद 4.11)। ध्यातव्य है कि विभिन्न शोधों के अनुसार बच्चों के लिए जटिल अवधारणाओं को समझना और सीखना उनकी मातृभाषा में अधिक सहज होता है। इसके साथ ही इस नीति

में यह सुनिश्चित करने का भी प्रयास किया गया है कि बच्चे अपने प्रारंभिक शैक्षणिक वर्षों में अपनी मातृभाषा में पढ़ाई करें, जिससे उनकी बुनियादी साक्षरता और संज्ञानात्मक विकास को सुदृढ़ता प्राप्त हो सके।

- **बहुभाषिकता पर जोर**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुभाषिकता से होने वाले संज्ञानात्मक लाभों को देखते हुए बुनियादी स्तर से ही बहुभाषिकता पर जोर देती है। इस नीति के अनुसार “बुनियादी स्तर की शुरुआत और इसके बाद से ही बच्चों को विभिन्न भाषाओं में (मातृभाषा पर विशेष बल) एक्सपोजर दिए जाएँगे” (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुच्छेद 4.12)। प्रारंभिक वर्षों में मातृभाषा को पढ़ना, लिखना सिखाने के बाद आगामी वर्षों में अन्य भाषाओं में पढ़ने एवं लिखने के कौशल विकसित किए जाएँगे।
- **त्रिभाषा फॉर्मूला**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में त्रिभाषा फॉर्मूले को लचीलेपन के साथ जारी रखा गया है। “बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली तीन भाषाओं के विकल्प राज्यों, क्षेत्रों और निश्चित रूप से विद्यार्थियों के स्वयं के होंगे, जिनमें से कम से कम तीन में से दो भाषाएँ भारतीय भाषाएँ हों।” (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुच्छेद 4.13)
- **भारतीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तकें**— बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के लिए संसाधनों की आवश्यकता होगी। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विभिन्न भाषाओं (घर की भाषा या मातृभाषा) में पाठ्यपुस्तकें और कम से

कम गणित एवं विज्ञान की पुस्तकों को द्विभाषी बनाने का प्रस्ताव रखती है। “इस संबंध में, उच्चतर गुणवत्ता वाली विज्ञान और गणित में द्विभाषी पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण-अधिगम सामग्री को तैयार करने के सभी प्रयास किए जाएँगे ताकि विद्यार्थी दोनों विषयों पर सोचने और बोलने के लिए अपने घर की भाषा या मातृभाषा और अंग्रेजी दोनों में सक्षम हो सकें।” (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुच्छेद 4.14)

- **भाषा शिक्षण**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भाषा शिक्षण के विभिन्न दृष्टिकोणों पर भी विचार करती है। यह नीति भाषा शिक्षण के लिए द्विभाषी शिक्षण-अधिगम सामग्री के साथ-साथ कक्षा में द्विभाषी दृष्टिकोण से पढ़ाने पर बल देती है। इसके अतिरिक्त यह नीति इस पर भी विशेष ध्यान देने की बात करती है कि भाषा को उबाऊ तरीके से न पढ़ाया जाए। “सभी भाषाओं को एक मनोरंजक और संवादात्मक शैली में पढ़ाया जाएगा, जिसमें बहुत सारी संवादात्मक बातचीत होगी” (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुच्छेद 4.12)। इसके साथ ही यह नीति विभिन्न भाषाओं के शिक्षण-अधिगम को लोकप्रिय बनाने के लिए तकनीक के प्रयोग पर भी ध्यान केंद्रित करने की सिफारिश करती है। जहाँ तक संभव हो अनुभव आधारित भाषा शिक्षण का प्रयोग किया जाए।
- **उच्चतर संस्थानों में भारतीय भाषाएँ**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 निजी एवं सार्वजनिक उच्चतर शिक्षा संस्थानों के विकास की बात करती है, जिनके निर्देश का माध्यम स्थानीय

या भारतीय भाषा या द्विभाषिक हो। इसके अतिरिक्त यह नीति भारतीय भाषाओं और द्विभाषी रूप से पढ़ाए जाने वाले अधिक डिग्री पाठ्यक्रमों को विकसित करने पर बल देती है।

- **भाषा के माध्यम से सांस्कृतिक संरक्षण—** भाषा, संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है इसलिए किसी भी संस्कृति के संरक्षण के लिए उस संस्कृति की भाषा का संरक्षण एवं संवर्धन करने की बात *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में की गई है। “भाषाएँ प्रासंगिक एवं जीवंत बनी रहें, इसके लिए इन भाषाओं में उच्चतम गुणवत्तापूर्ण अधिगम एवं प्रिंट सामग्री का सतत प्रवाह बने रहना चाहिए जिसमें पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, वीडियो, नाटक, कविताएँ, उपन्यास, पत्रिकाएँ आदि शामिल हैं।” इसके साथ यह अनुशांसा की गई कि विभिन्न भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए तकनीक का प्रयोग किया जाए। (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, अनुच्छेद 22.6) *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुभाषिकता को केंद्र में रखती है। यह नीति न केवल बच्चों की शैक्षिक नींव को मजबूत करने का प्रयास करती है, बल्कि भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बहुभाषिकता के प्रति यह दृष्टिकोण भारतीय समाज की विविधता और समृद्धि को बनाए रखने और उसे आगे बढ़ाने के लिए एक सशक्त माध्यम है।

बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 एवं बहुभाषिकता

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बहुभाषी सिद्धांत पर आधारित—** बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूलभूत सिद्धांतों में से एक बहुभाषिकता एवं शिक्षण तथा सीखने में बहुभाषावाद और भाषा की दृढ़ता को बढ़ावा देने पर बल देता है। इसके साथ ही कक्षा में घरेलू भाषा के साथ-साथ यथासंभव बहुभाषावाद के उचित उपयोग को भी सुनिश्चित किया जाए।
- **बहुभाषिकता के संज्ञानात्मक एवं सामाजिक या सांस्कृतिक लाभ—** बहुभाषिकता से न केवल बच्चे की घरेलू भाषा को कक्षा में सम्मान प्राप्त होता है, बल्कि बच्चे में अपनी भाषा के माध्यम से सांस्कृतिक जागरूकता एवं पहचान का बोध उत्पन्न होता है। वे एक बेहतर सामाजिक व्यवहार एवं आत्मविकास की ओर अग्रसर होते हैं।
- **बहुभाषी दृष्टि भाषाओं के बीच सफल आवाजाही में सहायक (Code Switching)—** एन.सी.एफ.एफ.एस. 2022 में यह स्पष्ट कहा गया है कि बुनियादी स्तर पर शिक्षण में बहुभाषी दृष्टि एवं बच्चे की घरेलू भाषा अपनाने से बच्चों को भाषाओं के बीच सहजता से स्थानान्तरित होने की क्षमता मिलती है। “उम्र के 6 से 8 वर्षों में बच्चों का संपर्क यदि नई भाषाओं से कराया जाए, तो वे इन भाषाओं

को विशेषकर अर्थपूर्ण संदर्भों में मौखिक संप्रेषण को तीव्र गति से सीखने में सक्षम होते हैं। अतः प्रारंभिक कक्षाओं में द्विभाषी या बहुभाषिक दृष्टि अपनाते हुए L1 के शिक्षण की मुख्य भाषा के रूप में प्रयोग करना बच्चों को भाषाओं के बीच सफल आवाजाही में सक्षम बनाता है। एन.सी.एफ.एम.एस. (खंड 3.2)

- **बुनियादी स्तर पर ही मौखिक भाषाओं का ज्ञान**— भारत की बहुभाषी संरचना को देखते हुए एन.सी.एफ.एम.एस. 2022 में बुनियादी स्तर पर बच्चों के विकास के अनुरूप उनके मौखिक बहुभाषी कौशलों को मजबूत बनाने की बात की गई है, जिससे उनको महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक एवं सामाजिक-भावनात्मक उत्प्रेरण मिल सके एवं आलोचनात्मक चिंतन की क्षमताओं का विकास हो सके।

- **बहुभाषिकता को बढ़ावा देने में शिक्षक की भूमिका**— बुनियादी स्तर पर बच्चे की मातृभाषा या घरेलू भाषा बच्चे के शिक्षण की प्राथमिक भाषा होनी चाहिए। बच्चे की घरेलू भाषा के पूर्ण उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय शिक्षक की अहम भूमिका होती है। जो कि उस भाषा से संबंधित स्थानीय संस्कृति एवं परंपराओं की भी समझ रखते हों। यदि शिक्षक को बच्चे की घरेलू भाषा का ज्ञान न हो तो बच्चे को अन्य भाषा सिखाने के लिए शिक्षक को उसकी भाषा को सहयोगी भाषा के रूप में प्रयोग करना चाहिए एवं शिक्षक को बच्चे की भाषा से

परिचय बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षक द्वारा बच्चे को अपनी घरेलू भाषा कक्षा में बोलने के लिए हतोत्साहित नहीं करना चाहिए।

बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 के अनुसार बहुभाषिकता को शिक्षा के बुनियादी स्तर से ही शिक्षा में सम्मिलित करना एक शिक्षक की एक महत्वपूर्ण पहल है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य बच्चों के भाषायी कौशल, संज्ञानात्मक विकास एवं सांस्कृतिक समझ में वृद्धि करना है। हालाँकि इसके लिए प्रशिक्षित एवं बहुभाषी शिक्षकों की आवश्यकता होगी, जिससे शिक्षक बच्चों को उनकी मातृभाषा या घरेलू भाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं में भी पढ़ा सकें। अंततः एन.सी.एफ.एम.एस. 2022 बच्चे के समग्र विकास के लिए एक प्रभावी दृष्टिकोण प्रदान करता है। परिणामस्वरूप भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधता को आत्मसात कर भारतीय समाज में सशक्त नागरिक बन सकते हैं।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 एवं बहुभाषिकता

- **बहुभाषीय क्षमता का विकास**— विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.एस.ई.) 2023 बहुभाषिकता पर बल देती है। विभिन्न अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि कई भाषा जानने वाले लोगों में संवाद करने की क्षमता अपेक्षाकृत बेहतर होती है इसके साथ ही उनमें संज्ञानात्मक क्षमताओं

का भी विस्तार होता है एवं बच्चों का विभिन्न भाषाओं के माध्यम से सांस्कृतिक जुड़ाव भी होता है।

- **बुनियादी स्तर से ही दो भाषाओं का शिक्षण—** विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में त्रिभाषा फ़ॉर्मूले को अपनाने पर बल दिया गया है। इसमें बुनियादी स्तर (3 से 8 वर्ष) पर दो भाषाओं के शिक्षण की बात कही गई है। इसके पश्चात 11 वर्ष तक उन्हीं दो भाषाओं में दक्षता प्राप्त करना, 11 से 16 वर्ष तक 3 भाषाओं का शिक्षण और 17 से 18 वर्ष तक दो भाषाओं का शिक्षण करवाया जाएगा। बुनियादी स्तर पर प्राथमिक भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा का शिक्षण भी करवाया जाएगा जिससे बच्चों का संज्ञानात्मक विकास बेहतर हो सके। (एन.सी.एफ.एस.ई. 2023, खंड 2.4)

- **कक्षा 11 एवं 12 में कम से कम दो भाषाओं का शिक्षण—** एन.सी.एफ.एस.ई. 2023 के अनुसार कक्षा 11 एवं 12 में कम से कम 2 भाषाओं का शिक्षण करवाया जाएगा, जिनमें से एक भाषा भारतीय भाषा होगी।

- **भाषाओं के माध्यम से सांस्कृतिक संरक्षण—** एन.सी.एफ.एस.ई. 2023 के अनुसार भारत की भाषाई विविधता को सहेजने और उसे बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। यह रूपरेखा विभिन्न भारतीय भाषाओं में शिक्षण सामग्री विकसित करने और विद्यार्थियों को उनकी पसंदीदा भाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करने का समर्थन करती है।

इसके अलावा एन.सी.एफ.एस.ई. 2023 में स्थानीय भाषाओं और बोलियों को भी शिक्षा में सम्मिलित करने का प्रावधान है, जिससे भाषाई धरोहर का संरक्षण हो सके।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुभाषिकता को सशक्त रूप से स्थापित करने का प्रयास करती है। यह रूपरेखा बहुभाषिकता को केवल भाषा शिक्षा के संदर्भ में ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समावेश, सामाजिक एकता और समग्र शिक्षा के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण मानती है। बहुभाषिकता के प्रति यह दृष्टिकोण भारतीय समाज की भाषाई विविधता और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और संवर्धित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

बहुभाषिकता की चुनौतियाँ

बहुभाषिकता, जहाँ एक ओर समाज की सांस्कृतिक और भाषाई समृद्धि का प्रतीक है, वहीं दूसरी ओर इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। इनमें से कुछ चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं—

- **शिक्षण सामग्री की कमी—** विभिन्न भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री की अनुपलब्धता एक बड़ी चुनौती है। बहुभाषिक शिक्षा प्रणाली के लिए आवश्यक पाठ्यपुस्तकें, डिजिटल संसाधन और अन्य शैक्षिक सामग्री कई भाषाओं में उपलब्ध नहीं होती, जिससे शिक्षण-प्रक्रिया प्रभावित होती है।
- **बहुभाषी शिक्षकों की कमी—** बहुभाषिक शिक्षा के लिए शिक्षकों का विभिन्न भाषाओं

में दक्ष होना आवश्यक है। हालाँकि, सभी क्षेत्रों में ऐसे शिक्षकों की उपलब्धता सीमित है। यह समस्या विशेष रूप से ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में और भी गंभीर रूप से दृष्टिगत होती है।

- **भाषाई असमानता**— सामान्यतः विभिन्न भाषाओं के मध्य असमानता की भावना का अनुभव होता है। ऐसा वहाँ होता है जहाँ प्रमुख भाषाओं (जैसे— हिंदी एवं अंग्रेज़ी) को अधिक महत्व दिया जाता है एवं अन्य क्षेत्रीय या अल्पसंख्यक भाषाओं को उपेक्षित किया जाता है। इससे विद्यार्थियों के बीच असमानता और भेदभाव की भावना पैदा हो सकती है।
- **संसाधनों का अभाव**— बहुभाषिक शिक्षा और प्रशासन के लिए आवश्यक संसाधनों, जैसे— प्रशिक्षित कर्मी, तकनीकी साधन और वित्तीय समर्थन का अभाव भी एक बड़ी चुनौती है।
- **संस्कृति और पहचान का मुद्दा**— बहुभाषिकता को अपनाने के दौरान कई बार सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण का सवाल उठता है। विशेषकर अल्पसंख्यक भाषाई समुदायों में यह चिंता होती है कि अन्य भाषाओं के प्रभाव से उनकी संस्कृति और भाषा का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है।
- **भाषाई जटिलता**— एक से अधिक भाषाएँ सीखने और प्रयोग करने से बच्चों और व्यक्तियों को कठिनाइयाँ हो सकती हैं। विशेषकर जब भाषा का प्रयोग दैनिक जीवन में कम हो, तो इसे सीखना और उसमें निरंतरता बनाए रखना कठिन हो सकता है।

• **समय और प्रयास की माँग**— बहुभाषिकता को विकसित करने में अधिक समय, प्रयास और संसाधनों की आवश्यकता होती है, जो सभी के लिए संभव नहीं हो सकता। विशेषकर उन परिवारों के लिए जहाँ शिक्षा के लिए सीमित संसाधन होते हैं।

• **अल्पसंख्यक भाषाओं का संरक्षण**— कई भाषाएँ जो छोटे-छोटे समुदायों द्वारा बोली जाती हैं, उनके विलुप्त होने का संकट बना रहता है। इसके साथ ही जब प्रमुख भाषाओं को शिक्षा और प्रशासन में अधिक प्राथमिकता दी जाती है, तो अल्पसंख्यक भाषाओं का प्रयोग कम हो जाता है, जिससे उनका अस्तित्व संकट में आ सकता है।

बहुभाषिकता में विविध सकारात्मक तथ्यों के समावेश होने के बावजूद भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों का समाधान समाज, सरकार और शैक्षणिक संस्थानों के संयुक्त प्रयासों से ही संभव है। इसके लिए नीतिगत सुधार, संसाधनों का समुचित आवंटन और भाषाई संवेदनशीलता को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि बहुभाषिकता को एक समावेशी और सशक्त माध्यम के रूप में विकसित किया जा सके।

कक्षा में बहुभाषी शिक्षण की संभावनाएँ

कक्षा में बहुभाषी शिक्षण की संभावनाएँ बढ़ाने के लिए विभिन्न पहलुओं पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। इनमें भाषा शिक्षण की विधियाँ, कक्षायी प्रक्रियाएँ, पाठ्यपुस्तकें, सहायक सामग्री, शिक्षक की भूमिका और मूल्यांकन आदि सम्मिलित

हैं। इन पहलुओं पर विस्तार से चर्चा निम्नलिखित प्रकार से की गई है—

भाषा शिक्षण की विधियाँ

- **व्यावहारिक दृष्टिकोण**— बहुभाषी शिक्षण में संवाद-आधारित और अनुभव-आधारित शिक्षण विधियाँ अधिक प्रभावी होती हैं। विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की स्थितियों में भाषा के प्रयोग का अवसर दिया जाना चाहिए, जैसे— समूह चर्चाएँ, नाटकों का मंचन और संवादात्मक गतिविधियाँ आदि।
- **भाषाई रूपांतरण**— यह विधि विद्यार्थियों को पूरी तरह से एक भाषा को पूर्ण रूप से सिखाने पर केंद्रित है, जिससे वे उस भाषा में सोचने और बोलने में अधिक कुशल हो सकें। उदाहरण के लिए, कक्षा के कुछ भाग या पूरे सत्र को एक विशेष भाषा में संचालित किया जा सकता है।
- **मिश्रित अधिगम**— इसमें डिजिटल और पारंपरिक शिक्षण विधियों का मिश्रण होता है। डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग करते हुए बहुभाषी सामग्री को कक्षा में शामिल किया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं में सीखने का अनुभव मिलता है।

कक्षाई प्रक्रियाएँ

- **भाषाई समूह**— कक्षा में विद्यार्थियों को उनकी भाषाई पृष्ठभूमि के आधार पर समूहों में बाँटा जा सकता है, जहाँ वे अपनी मातृभाषा या दूसरी भाषा में अध्ययन और चर्चा कर सकते हैं। इससे भाषा सीखने की प्रक्रिया में सुगमता होती है।

- **संवादात्मक वातावरण**— कक्षा में एक ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए जहाँ विद्यार्थी बिना किसी संकोच के विभिन्न भाषाओं में संवाद कर सकें। यह बहुभाषी शिक्षा के लिए आवश्यक है, क्योंकि संवाद भाषा सीखने का सबसे प्रभावी माध्यम है।
- **विविध भाषा अभ्यास**— नियमित अभ्यास सत्र, जिसमें विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं में बोलने, पढ़ने और लिखने के लिए प्रेरित किया जाता है जो कि कक्षायी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग हो सकते हैं।

पाठ्यपुस्तकें

- **बहुभाषी पाठ्यपुस्तकें**— पाठ्यपुस्तकों को इस प्रकार डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि वे एक से अधिक भाषाओं में सामग्री प्रस्तुत करें। उदाहरण के लिए, प्रत्येक अध्याय के अंत में महत्वपूर्ण शब्दावली और अवधारणाओं को दूसरी भाषा में भी समझाया जा सकता है।
- **अनुवाद और समकक्षता**— पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न भाषाओं के बीच समकक्ष सामग्री प्रदान की जा सकती है, जिससे विद्यार्थी आसानी से एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलाव कर सकें।
- **द्विभाषी सामग्री**— पाठ्यपुस्तकें ऐसी होनी चाहिए जो एक ही समय में दो भाषाओं में पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करें, जैसे कि एक पेज पर हिंदी और दूसरे पर अंग्रेज़ी, जिससे विद्यार्थियों को दोनों भाषाओं में विषय समझने में सहायता प्राप्त हो सके।

सहायक सामग्री

- **दृश्य और श्रव्य सामग्री**— कक्षा में बहुभाषी वीडियो, ऑडियो क्लिप और अन्य दृश्य सामग्री का उपयोग किया जा सकता है, जैसे— सभी द्विभाषी कहानियाँ, गीत और नाट्य प्रस्तुतियाँ आदि।
- **डिजिटल संसाधन**— डिजिटल प्लेटफ़ार्मों पर उपलब्ध बहुभाषी सामग्रियाँ, जैसे— द्विभाषी ऐप्स, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और ई-बुक्स विद्यार्थियों को अपनी गति से भाषा सीखने में सहायक होती हैं।
- **शैक्षिक खेल**— बहुभाषी खेल एवं गतिविधियाँ, जैसे— क्रॉसवर्ड्स, क्विज़ और पहेलियाँ आदि विद्यार्थियों को भाषा सीखने के लिए प्रेरित करती हैं और उन्हें विभिन्न भाषाओं के संदर्भ में अपनी समझ को अधिक व्यापक बनाती हैं।

शिक्षक की भूमिका

- **बहुभाषी प्रशिक्षक**— शिक्षक का बहुभाषी होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें विभिन्न भाषाओं में दक्ष होना चाहिए, ताकि वे विद्यार्थियों को बेहतर मार्गदर्शन दे सकें और विभिन्न भाषाओं को आपस में जोड़ने का कार्य कर सकें।
- **भाषाई मॉडल**— शिक्षक को एक भाषा मॉडल के रूप में काम करना चाहिए, जहाँ वे विभिन्न भाषाओं का प्रयोग कर विद्यार्थियों को प्रेरित कर सकें। इसके लिए वे कक्षा में नियमित रूप से बहुभाषी संवाद और गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं।

- **संवेदनशीलता और सहानुभूति**— शिक्षक को विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील और सहानुभूतिशील होना चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि प्रत्येक विद्यार्थी की भाषा सीखने की गति और शैली अलग-अलग होती है।

मूल्यांकन

- **समग्र मूल्यांकन**— बहुभाषी शिक्षण में मूल्यांकन को इस प्रकार डिजाइन किया जाना चाहिए कि शिक्षक विद्यार्थियों की भाषा दक्षता, समझ और भाषा प्रयोग की क्षमता को माप सके। इसमें मौखिक, लिखित और श्रवण कौशल का मूल्यांकन शामिल होना चाहिए।
- **आवधिक मूल्यांकन**— भाषा सीखने की प्रगति को मापने के लिए नियमित अंतराल पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा और सीखी जा रही भाषा दोनों में मूल्यांकन का अवसर दिया जाए।
- **विविध मूल्यांकन तकनीकें**— मूल्यांकन के लिए विविध तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है, जैसे— परियोजनाएँ, प्रेजेंटेशन, भूमिका निभाना और भाषा-आधारित समस्या समाधान। इससे विद्यार्थियों की बहुभाषी दक्षता का व्यापक आकलन किया जा सकता है।

कक्षा में बहुभाषी शिक्षण की संभावनाएँ अत्यधिक व्यापक और गहन होती हैं। उचित शिक्षण विधियों, प्रक्रियाओं, सामग्री और शिक्षक के मार्गदर्शन से विद्यार्थियों को न केवल विभिन्न

भाषाओं में दक्ष बनाया जा सकता है, बल्कि उन्हें एक वैश्विक नागरिक बनने की दिशा में भी प्रेरित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

बहुभाषिकता, बुनियादी स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक है, बल्कि समाज में सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को भी प्रोत्साहित करती है। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने से बच्चों की शैक्षणिक नींव मजबूत होती है और वे जटिल अवधारणाओं को सुगमतापूर्वक से समझ सकते हैं। इसके अलावा, बहुभाषिक शिक्षा से विद्यार्थियों में संज्ञानात्मक लचीलापन, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और सामाजिक समावेशिता की भावना विकसित होती है। हालाँकि, बहुभाषिकता के क्रियान्वयन में

कई चुनौतियाँ भी हैं, जैसे— शिक्षकों की कमी, संसाधनों का अभाव और नीतिगत असंगतियाँ आदि। इन चुनौतियों का समाधान समाज, सरकार और शैक्षणिक संस्थानों के सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। शिक्षकों का बहुभाषी होना, प्रभावी शिक्षण विधियों का उपयोग और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री का विकास बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए बहुभाषिकता को साक्षरता के क्षेत्र में एक समावेशी और सशक्त माध्यम के रूप में अपनाना नितांत आवश्यक है। इससे न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा, बल्कि समाज में भाषाई और सांस्कृतिक विविधता का भी संरक्षण और संवर्धन होगा। इसके लिए नीतिगत सुधार, संसाधनों का समुचित आवंटन और भाषाई संवेदनशीलता को बढ़ावा देना आवश्यक है।

संदर्भ

- अन्नामलाई, ई. 1979. लैंग्वेज मूवमेंट्स इन इंडिया. सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडियन लैंग्वेजस, मैसूर
- एंको-वोरल, ए.डी. 1972. बाइलिंगुएलिज्म एंड कॉग्निटिव डेवलपमेंट. *चाइल्ड डेवलपमेंट*. 43(4). पृष्ठ संख्या 1390–1400. <https://doi.org/10.2307/1127524> से 2 अप्रैल 2024 को प्राप्त किया गया।
- कमिन्स, जे. और एम. स्वाइन. 1986. *बाइलिंगुएलिज्म इन एजुकेशन*. लॉन्गमैन, लंदन.
- कुलकर्णी, प्रदन्या. 2013. रोल ऑफ़ मल्टीलिंगुएलिज्म इन कॉग्निटिव डेवलपमेंट. *बुलेटिन ऑफ़ द डेक्कन कॉलेज*. पृष्ठ संख्या 475–480.
- पटनायक, डी.पी. 1981. *मल्टीलिंगुएलिज्म एंड मदर-टंग एजुकेशन*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- बियालीस्टोक, एलेन. 2001. *बाइलिंगुएलिज्म इन डेवलपमेंट*. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. पृष्ठ संख्या 59–60.
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.
- मैकेनामारा, जे. 1966. *बाइलिंगुएलिज्म एंड प्राइमरी एजुकेशन*. एडीनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस.

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.
- . 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी स्तर 2022*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.
- . 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.
- राव, एस.एस. 2008. *इंडियाज़ लेग्वेज डिबेट्स एंड एजुकेशन ऑफ़ लिंगुइस्टिक माइनोरिटिस*. https://www.researchgate.net/publication/261890758_India's_Language_Debates_and_Education_of_Linguistic_Minorities से 18 मई 2024 को प्राप्त किया गया।
- सायर, डी. 1923. दी इफ़ेक्ट ऑफ़ बाइलिंग्वालिज़्म ऑन इंटेलिजेंस. *ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजी*. 14. पृष्ठ संख्या 25–38.
- सिंह, संध्या और कीर्ति कपूर. 2010. *समझ का माध्यम — राष्ट्रीय परिसंवाद 2008–2010*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.
- श्रीवास्तव, आर. 2018. भारत में बहुभाषिकता तथा हिंदी भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ. *भाषा शिक्षण के विविध आयाम*. लालचंद राम (संपादक). विश्व ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली.
- <https://language.census.gov.in/map/data/showDashboard> 25 मई 2024 को प्राप्त किया गया।